Six-day training of BPrS officers starts at CIMP

A six-day training programme for Bihar Prison Service (BPrS) Officers was inaugurated in Chandragupt Institute of Management Patna on Monday by Shri K. Senthil Kumar, IAS, Secretary, Home Department, Govt. of Bihar. In his inaugural address he said that if there is a perception in the society about the jailer that he is a jailer, he will send anyone to jail. It has generally been seen that people in the society start behaving like the one they live with, even if they are thieves. He further said as an example that there was a criminal in Maharashtra, who read the auto biography of Mahatma Gandhi in the jail library, when asked by the judge, did you commit this crime, he says that whatever I have done sir, done by mistake. I accept whatever punishment I get for this. Then the prisoner after serving his sentence got out and started working on social service. That is to say, even by going to jail, you can be linked with the main stream of the society by bringing changes in the prisoners through your systems.

Dr. V. Mukunda Das in his welcome address said that this type of MDP is being organized for the second time in our institute. He said that this training is basically to reorient the perspective and perception. He further said that the world is changing, you also need to change. This is the main objective of this entire training program. He also said that Bihar has the largest number of people who died in the freedom struggle in the country.

Shri Mithilesh Mishra, IAS, IG-Prisons, Bihar was present in this program as a Guest of Honour. In his address said that the prison department is doing very critical job in managing the jails and human resources. He asked the participating officers to apply the management learnings from CIMP with the respective jails. So that they can reform at least some of the inmates he become civilized citizens.

Creative Thinker-Writer-Graphologist Dr. Prasad Sundararajan in his address said that freedom is a great paradox of the present situation. Creativity is all about freedom. He further said that all wrong-doers are very creative in their approach and therefore the jail authorities need to adopt a doubly creative approach to outsmart them. He also said that this programme is the wonderful opportunity in between you have freedom to discover what the course pattern significant contents of indicating. Take this wonderful opportunity at CIMP and reflect and understand how come those queries and perspective managing life, work and relation. Try to become great genius.

Vote of thanks given by Prof. Sudeep Rohit.

सीआइएमपी में बिहार जेल सेवा के अधिकारियों का छह दिवसीय प्रशिक्षण शुरू

चन्द्रगुप्त इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट पटना (सीआइएमपी) में सोमवार को बिहार जेल सेवा (बीपीआरएस) अधिकारियों के लिए छह दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम की शुरूआत हुई। कार्यक्रम का उद्घाटन गृह विभाग के सचिव के सेंथिल कुमार द्वारा किया गया। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि जेलर को लेकर समाज में जो परसेप्सन है कि जेलर है तो वह किसी को भी जेल भेज देगा। आमतौर पर देखा गया है कि समाज में लोग जिसके साथ रहते हैं उसी के जैसा वह व्यवहार भी करने लगते हैं चाहें वो चोर क्यों न हो। उन्होंने आगे एक उदाहरण के तौर पर कहा कि महाराष्ट्र में एक क्रिमिनल था, जिन्होंने जेल के लाईब्रेरी में महात्मा गांधी जी की औटो बायोग्राफी पढ़कर जज के द्वारा पूछे जाने पर क्या आपने यह क्राईम किया है वह बोलता है कि सर जो भी मैंने किया है यह गलती से किया है। इसके लिए मुझे जो भी सजा मिले मुझे मंजूर है। फिर वह कैदी अपनी सजा काटकर बाहर निकलने के बाद सामाजिक सेवा पर काम करने लगा। यानि कहने का तात्पर्य यह है कि जेल जाकर भी आप अपने व्यवस्थाओं से कैदियों में बदलाव लाकर समाज की मुख्य धारा से जोड़ा जा सकता है।

डॉ. वी. मुकुंद दास ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि हमारे संस्थान में इस प्रकार का एमडीपी दूसरी बार आयोजित किया जा रहा है. उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण मूल रूप से परिप्रेक्ष्य और धारणा को नया रूप देने के लिए है। उन्होंने आगे कहा कि दुनिया बदल रही है, आपको भी बदलने की जरूरत है। यही इस संपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। उन्होंने यह भी कहा कि देश में स्वतंत्रता संग्राम में मरने वालों की संख्या सबसे ज्यादा बिहार में है।

श्री मिथिलेश मिश्रा, आईएएस, महानिरीक्षक-कारागार, बिहार इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि विभाग जेलों और मानव संसाधन के प्रबंधन में बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है। उन्होंने भाग लेने वाले अधिकारियों को संबंधित जेलों के साथ सीआइएमपी से प्रबंधन की सीख को लागू करने के लिए कहा ताकि वे कम से कम कुछ कैदियों में सुधार कर सकें और उन्हें सभ्य नागरिक बना सकें।

रचनात्मक विचारक-लेखक-ग्राफोलॉजिस्ट डॉ प्रसाद सुंदरराजन ने अपने संबोधन में कहा कि स्वतंत्रता वर्तमान स्थिति का एक बड़ा विरोधाभास है। रचनात्मकता सभी स्वतंत्रता के बारे में है। उन्होंने आगे कहा कि सभी गलत करने वाले अपने दृष्टिकोण में बहुत रचनात्मक हैं और इसलिए जेल अधिकारियों को उन्हें बाहर निकालने के लिए दोहरा रचनात्मक दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है। उन्होंने यह भी कहा कि यह कार्यक्रम एक अद्भुत अवसर है जिसके बीच आपको यह पता लगाने की स्वतंत्रता है कि पाठ्यक्रम पैटर्न क्या इंगित करने की महत्वपूर्ण सामग्री है। सीआइएमपी में इस शानदार अवसर का लाभ उठाएं और प्रतिबिंबित करें और समझें कि जीवन, कार्य और संबंध को प्रबंधित करने वाले वे प्रश्न और परिप्रेक्ष्य कैसे आते हैं। महान प्रतिभाशाली बनने का प्रयास करें।

कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद प्रस्ताव प्रो. सुदीप रोहित ने दिया।